Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 04, (सितम्बर, 2024)
पृष्ठ संख्याः 42–44

रमबूटानः एक अनोखा और बहुपयोगी फल

शशि कला
खाद्य विज्ञान एवं कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी,
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर,
भागलपुर–813210, भारत।

Email Id: – shashi.agriculture@gmail.com

रमबूटान एक सदाबहार वृक्ष है, जिसका वैज्ञानिक नाम *Naphelium lappaceum* L. है, जो सैपिंडेसी परिवार का है। रमबूटान का फल लीची की प्रजाति का होता है और इसे हेयरी लीची भी कहा जाता है क्योंकि यह दिखने में लीची जैसा होता है, लेकिन इसके छिलके पर बालों जैसे वृद्धि होती है। वृक्ष की ऊँचाई 10–15 मीटर तक होती है। यह दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों जैसे मलेशिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया में मूल रूप से पाया जाता है, साथ ही यह अमेरिका के आर्द्र उष्ण कटिबंध देशों जैसे कोलंबिया, इक्वाडोर, होंडुरास, कोस्टा रिका इत्यादि में भी पाया जाता है। भारत में केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और उत्तर–पूर्वी राज्यों में भी पाया जाता है। मुख्यतः पेड़ों के तीन प्रकार होते हैंः केवल नर फूल देने वाले, केवल मादा फूल देने वाले और हर्माफ्रोडाइट फूल देने वाले वृक्ष। रमबूटान का फल लीची की तरह ओवल आकार का होता है। फल गुच्छों में आते हैं और फल को एक बीज वाली बेरी कहा जाता है। फल का एरिल बहुत मीठा और मुलायम होता है जो खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है। प्रायः फलों का सेवन ताजा ही होता है, हालांकि इससे विभिन्न प्रकार के प्रसंस्कृत पदार्थ बनाए जा सकते हैं। इनके बीजों से तेल निकाल कर साबुन बनाने की फैक्ट्री में उपयोग होता है। जड़ और पत्तियाँ औषधीय उपयोग में आती हैं।

पोषण

रमबूटान फल प्रति 100 ग्राम में पाए जाने वाले पोषक तत्वः

ऊर्जा	**: 38किलोकैलोरी**
कार्बोहाइड्रेट	**: 9.62 ग्राम**
डायटरी फाइबर	**: 1.0 ग्राम**
व्सा	**: 0.04 ग्राम**
प्रोटीन	**: 0.76 ग्राम**
थायमिन (ठ1)	**: 3 ग्राम**
राइबोफ्लेविन (ठ2)	**: 2 ग्राम**
नियासिन (ठ3)	**: ग्राम**
विटामिन(ठ6)	**: 3 ग्राम**
विटामिनसी	**: 73 ग्राम**
आयरन	**: 1 ग्राम**
मैग्नीशियम	**: 2 ग्राम**
मैंगनीज	**: 1 ग्राम**
फॉस्फोरस	**: 2 ग्राम**
पोटैशियम	**: 5 ग्राम**
जिंक	**: 1 ग्राम**

(स्रोतः USDA पोषक तत्व डेटाबेस)

स्वास्थ्य लाभ

रमबूटान में विटामिन सी और फाइबर की मात्रा अधिक होती है, परंतु कैलोरी कम होती है। यह इम्युनिटी बढ़ाने, पाचन सुधारने, वजन कम करने और गंभीर बीमारियों से रक्षा करने में मदद करता है। यह शरीर को हाइड्रेटेड रखता है। त्वचा, बाल और हड्डियों को भी स्वस्थ बनाता है। फल, बीज और पत्तियों का उपयोग बुखार, संक्रमण और दस्त जैसी बीमारियों के इलाज के लिए भी किया जाता है।

जलवायु एवं मृदा

भारत में रमबूटान 1000 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। सम्पूर्ण भारत के लिए वृक्ष को 22°C से 30°C तापमान तथा समान रूप से वितरित वर्षा की आवश्यकता होती है। हालांकि 40°C से ज्यादा तापमान में इसका विकास प्रभावित होता है। भूमध्य रेखा के 12–15° पर यह व्यावसायिक रूप से उगता है। अच्छी तरह से निथरा, गहरी और उपजाऊ मृदा जिसका pH 5.0 से 6.5 हो, रमबूटान के विकास के लिए बेहतर होती है। 80–85% से अधिक की आर्द्रता वृक्ष की वृद्धि के लिए आवश्यक होती है। 200–500 से.मी. प्रति वर्ष वर्षा में यह अच्छी वृद्धि करता है, हालांकि फल परिपक्वता के समय वर्षा या 3 महीने से अधिक सूखा फल में दरारें करता है। रमबूटान विभिन्न प्रकार की मृदा में उगता है, लेकिन सैंडी लोम से क्ले लोम मृदा में जैविक पदार्थ के साथ काफी अच्छी वृद्धि देता है। पानी लगना वृक्ष के लिए हानिकारक है, इसलिए ढलान वाली जगह इसके विकास के लिए उत्तम होती है।

प्रजातियाँ

प्रजाति	वृक्ष विवरण	संस्था / स्थान
अर्का कूर्ग अरुण	वृक्ष की अर्ध फैलाव प्रवृत्ति होती है, और यह फरवरी–मार्च के दौरान फूलता है। इसके फल का रंग गहरा लाल होता है, और ये सितंबर–अक्टूबर के आसपास परिपक्व होते हैं। एक वृक्ष से 750–1000 फल प्राप्त होते हैं।	IIHR, कूर्ग, कर्नाटक
अर्का कूर्ग पातिब / पीताभ	वृक्ष की अर्ध फैलाव प्रवृत्ति होती है, और यह फरवरी–मार्च के दौरान फूलता है। इसके फल की त्वचा का रंग पीला होता है, और ये अक्टूबर में परिपक्व होते हैं। एक वृक्ष से 1200–1500 फल प्राप्त होते हैं।	
N 18	यह एक उच्च उपज वाला लाल रंग फल की किस्म है, जिसका बाहरी छिलका बहुत मोटा होता है, जिससे इसकी शेल्फ लाइफ लंबी होती है।	नर्सरी और फार्म्स, केरल
E 35	यह एक उच्च उपज वाली पीली रंग की फल की किस्म है, जिसका अरिल बीज से आसानी से अलग हो जाती है।	

प्रचार विधियाँ

रमबूटान को बीज, बडिंग, ग्राफ्टिंग तथा एयर लेयरिंग प्रक्रिया द्वारा प्रचारित किया जा सकता है। हालांकि बीज से पौधा रोपण आसान तो है लेकिन इसमें नर फूल वाले पौधे 50 प्रतिशत तक निकल जाते हैं। इसलिए इन्हें रूटस्टॉक के लिए ही उपयोग किया जाता है। अप्रौच ग्राफ्टिंग/इनआर्चिंग रमबूटान के प्रचार के लिए उचित होता है। हालांकि यह श्रम–गहन और जटिल प्रक्रिया है। एयर लेयरिंग से तैयार पौधे ज्यादातर ट्रांसप्लांटिंग के बाद जीवित नहीं बचते।

स्पेसिंग और पौधारोपण

पौधा से पौधा दूरी 10 X10 मीटर से 12 X12 मीटर रखते हैं। वेजिटेटिव प्रचार से तैयार पौधों में 8 X 8 से 8 X 6 मीटर की दूरी रखते हैं। पौधारोपण के लिए 1 X 1 X 1 मीटर का गड्ढा खोदकर उसमें खाद और मृदा मिला दें। जून–जुलाई में पौधा लगाने का सही समय होता है।

मल्चिंग

छोटे और वयस्क रमबूटान के वृक्ष के तनों के बेस में सूखी पत्तियाँ, घास और ऑर्गेनिक अवशेष मिला देनें से मृदा में आर्द्रता बनी रहेगी और साथ ही अनावश्यक खर पतवार भी नहीं पनपेंगें साथ हीं मृदा का तापमान भी नियंत्रित रहेगा।

हार्वेस्टिंग और उपज

रमबूटान के फल जब गुलाबी होने लगें तब फलों को थोड़े तनों के साथ तोड़ना चाहिए। सिकेटर्स की मदद से बिना नुकसान पहुँचाए तोड़ना चाहिए। भारत में साल में बस एक बार ही फसल होती है जो जुलाई से अक्टूबर तक मिलती है। औसतन 2000–3000 फल प्रति वृक्ष से प्राप्त होता है। 50–70 किलोग्राम/वृक्ष या 8 टन/एकड़ उपज मिलती है।

भंडारण एवं पैकेजिंग

फलों को सावधानी से ठंडी, अंधेरी और अच्छी तरह हवादार स्थान पर रखना चाहिए। फलों को उनके आकार और अवस्था के आधार पर ग्रेडिंग करें। धोने और सुखाने के बाद ताजा फलों को 60 X 28 X 28 सेमी माप के हवादार बॉक्स में पैक कर दें।

कीट–पतंगे एवं रोग

भारत के अंदर बहुत अधिक प्रमुख कीट और बीमारियाँ तो नहीं हैं लेकिन कहीं–कहीं फ्रूट बोरर, मेली बग्स, माइट्स और थ्रिप्स इत्यादि और पाउडरी मिल्ड्यू और सूटी मोल्ड का संक्रमण नोटिस किया गया है।

प्रसंस्कृत पदार्थ

प्रसंस्कृत पदार्थ से रमबूटान के फलों का स्वाद हम लंबे समय तक ले सकते हैं। ताजे फलों को कैनिंग कर सकते हैं, इससे जैम, जेली, कैंडी प्रिजर्व्स भी बनाए जा रहे हैं। भारत में इन उत्पादों की विशेष मांग और संभावनाएँ बन सकती हैं। रमबूटान जूस, सिरप, वाइन, शर्बत और पेस्ट भी तैयार कर बाजार में भेजा जा सकता है। विदेशों में रमबूटान के विभिन्न प्रसंस्कृत पदार्थों की बहुत मांग है। महंगे आइसक्रीम पार्लर्स में इससे बनने वाली आइसक्रीम भी उपलब्ध है।

चुनौतियाँ

रमबूटान के प्रसंस्कृत पदार्थ महंगे दामों में उपलब्ध हैं साथ हीं लोगों में जागरूकता की कमी है। यह कम महत्व के फल में आता है। जल्दी सड़ने की यह एक और कमी है जिससे उच्च गुणवत्ता वाला उत्पाद बनाना चुनौतीपूर्ण कार्य है।